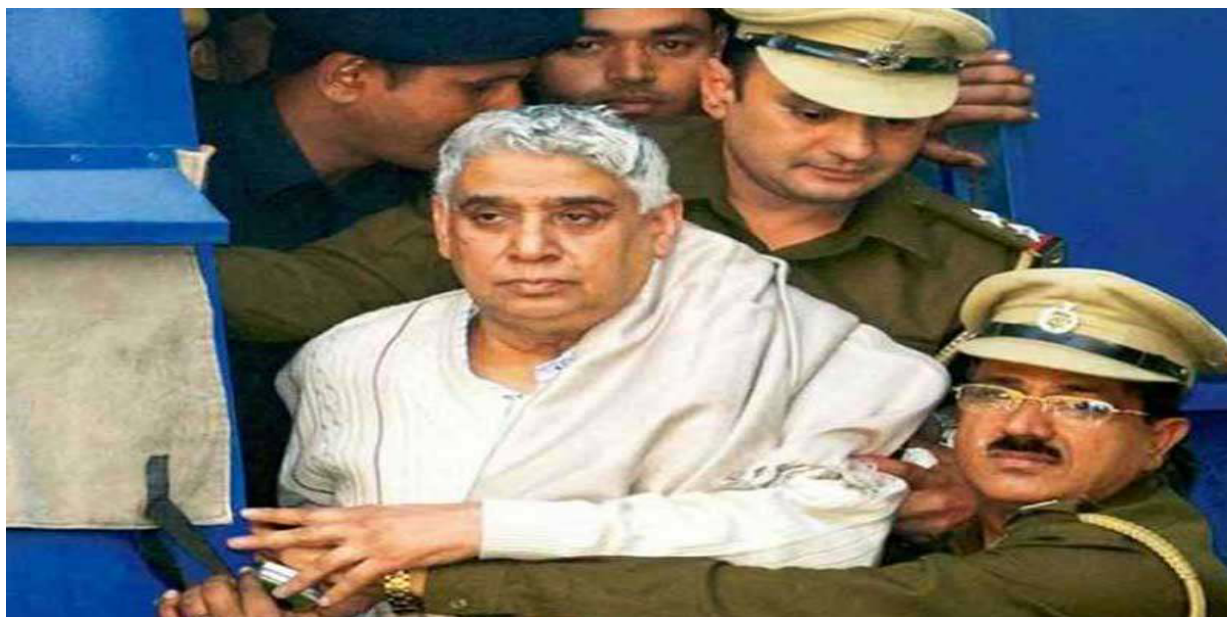


## ढोंगी बाबा रामपाल के पास कभी खाने को नहीं हुआ करती थी रोटी, मामूली का सरकारी नौकर ऐसे बना संत रामपाल



संत रामपाल जो कभी हरियाणा में लोगों के बीच में पूजा जाता था और भगवान माना जाता था आज दोषी करार दे दिया गया है. 2 लोगों की हत्या के केस में अब संतराम को सजा होनी पक्की हो गई है और इसी के बाद से भक्तों का गुस्सा एक बार फिर से उबाल मार रहा है. आज जेल में अदालत लगाई गई और संत रामपाल को उसके पापों के लिए दोषी ठहराया गया है.

आपको बता दें कि साल 2014 में जब रामपाल के ऊपर कार्रवाई करने पुलिस गई थी तो उस समय पुलिस और भक्तों की झपड़ हुई थी. आश्रम के अंदर दो महिलाओं की मौत हो गई थी. इस मौत का जिम्मेदार संत रामपाल को ठहराया गया है और इसी के लिए रामपाल को दोषी करार दिया गया है लेकिन एक समय ऐसा भी था जब रामपाल मामूली सी नौकरी किया करता था. आइए आपको बताते हैं कि कैसे एक मामूली सा सरकारी नौकर अचानक से ही करोड़ों का मालिक बन जाता है-

### **रामपाल की दौलत अचानक से ही करोड़ों की हुई है**

रामपाल कभी हरियाणा में सिंचाई विभाग के अंदर इंजीनियर हुआ करता था. यह सरकारी इंजीनियर एक मामूली सी नौकरी करता था और सरकार से जो पैसे मिलते थे उसी से घर परिवार पालने में व्यस्त था. किसी को नहीं पता था कि रामपाल अचानक से ही करोड़पति बनने वाला है और हरियाणा राज्य के अंदर जल्द ही रामपाल को भगवान मान लिया जाएगा।

पढ़ाई पूरी करने के बाद रामपाल ने हरियाणा सरकार के अंदर सिंचाई विभाग में जूनियर इंजीनियर की नौकरी प्राप्त कर ली थी. नौकरी के दौरान रामपाल एक बार कबीरपंथी संत स्वामी रामदेव आनंद महाराज जी से मिला था. रामपाल, रामदेव आनंद के शिष्य बन गए और 21 मई 1995 को संत रामपाल ने 18 साल की अपनी नौकरी से इस्तीफा देकर सत्संग करना शुरू कर दिया था.

जैसे ही संत रामपाल बाबा बना तो लगातार इसकी ख्याति लोगों में फैलती गई और इसके अनुयाइयों की संख्या बढ़ती गई.

कमला देवी नाम की एक महिला ने रामदास महाराज को आश्रम के लिए जमीन दे दी और 1999 में बंदी छोड़ ट्रस्ट की सहायता से रामपाल महाराज ने सतलोक आश्रम की नींव रखी थी.

बस यहाँ से रामपाल ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा और इस धीरे-धीरे लोगों की संख्या बढ़ती गई और यह रामपाल करोड़ोंका मालिक बन गया.

एक दिन ऐसा आया जब रामपाल खुद को भगवान मानने लगा. लोगों में इसकी पूजा होने लगी और इसी के बाद ही रामपाल की संपत्ति में अचानक से बहुत बड़ा उछाल आया और एक मामूली सा सरकारी नौकर अचानक से करोड़पति बन गया.

### **कबीर दास के दोहे**

कबीर दास एक दिन धरती पर वापिस आये और रामपाल को दूसरा कबीर बने बैठा देख उनके मुख से कुछ दोहे निकले।

इन दोहों से कबीर के मन में रामपाल के पाखंड को देखकर जो दुःख था वह प्रकट होता हैं। रामपाल के अंधे चेलो अब तो आंखे खोलो।

राम चन्द्र कह गये सिया से ऐसा वक्त आयेगा

पंडित गोली खायेगे और अनपढ़ वेद पढ़ायेगा

(यह दोहा रामपाल के पाखंड के विरुद्ध अपना जीवन बलिदान करने वाले करोंथा में शहीद होने वाले वेदों के विद्वान आचार्य उदयवीर जी को समर्पित हैं)

वेद का अर्थ निकाले रामपाल अनपढ़

कबीरा देख बोला दुल्हा आया गधीचढ़

कहे कबीर सुन भई साधो घोर कलजुग आयेगा

अनपढ़ रामपाल ज्ञान बाटयो खुब मुख बनायेगा

रामपाल बैठा बरवाला में अपना फन उठाये

जिस जिस को डसवाना हो बरवाला हो आये

कहे कबीरा सुनो रे साधो रामपाल को अक्ल नहीं आनि

काहे जीवन व्यर्थ करे हो सुनो सकल दयानंद की वाणी

## **कबीर दास द्वारा राम और कृष्ण का गुणगान**

कबीर दास अपने आपको ईश्वर या उनका अवतार कभी नहीं मानते थे, क्योंकि अगर वे अपने को ईश्वर मानते तो श्री रामचन्द्र जी और श्री कृष्ण जी का गुणगान नहीं करते अपितु यह कहते की मैं ही राम और मैं ही कृष्ण हूँ। जबकि कबीर ग्रन्थावली में अनेक स्थलों पर स्वयं कबीर द्वारा राम और कृष्ण जी का गुणगान मिलता है।

एक मुहावरा है गुरु तो गुड़ थे चेलो ने शक्कर बना दी।

यही हालत रामपाल और उसके पंथ को मानने वालों ने की है। पहले रामपाल ने अपनी दुकान कबीर का नाम का सहारा लेकर शुरू की बाद में स्वयं को कबीर का अवतार घोषित कर दिया। खेद है जिस कबीर ने ईश्वर को निराकार माना था उसी कबीर को पहले उसी के चेलो ने साकार ईश्वर बना दिया फिर उसके चेला रामपाल खुद को कबीर का अवतार बताने लगा।

यही नहीं वेदों में ईश्वर को साकार दिखाने का असफल प्रयास भी रामपाल कर रहा है। जो रामपाल हिंदी भाषा को भी ठीक प्रकार से पढ़ नहीं सकता, जिसके लिए संस्कृत के वेद मन्त्रों को पढ़ पाना तक उसके बस की बात नहीं है, वह रामपाल वेदों पर भाषा भाष्य करने का प्रयास करता है। कुछ लोग रात को स्वप्न लेते हैं रामपाल और उसके चेले तो दिन में ही स्वप्न लेते हैं।

अभी स्वयंघोषित कबीर का अवतार रामपाल बूढ़ा हो गया है, आँखों से बिना चश्मे नहीं देख पाता, बाल सफेद हो गये हैं, बोलते समय उसका मुँह टेढ़ा हो जाता है जिससे कुछ शब्द वह तोतले बोलता है। ऐसे बीमार व्यक्ति को भगवान मानने वाले चेलों के बारे में कबीर का ही एक दोहा है –

सतगुरु बपुरा क्या करै जे सिषही मांहे चूक भावै त्यं प्रमोघि ले, ज्युं बंसि बजाई फूक।

अपने आपको कबीर का अवतार कहने वाला रामपाल यह बताये की क्या कबीर के वो दोहे गलत हैं जिसमें कबीर ने राम और कृष्ण का गुणगान किया है ? अथवा यह गुरुडम की दुकान चलाने के लिए कबीर को जूठा घोषित करना किसी भी प्रकार से गलत नहीं है।

रामपाल की इस धूर्तता पर कबीर दास अपना ही एक दोहा फिर से पढ़ देते हैं –

जाका गुरु भी अंधला चेलौ खरा निरंध/अंधौ अंधा ठेलिया ठूल्युं कूप पडेत।

कबीर श्री राम जी और श्री कृष्ण जी की जगह जगह स्तुति करते हैं प्रमाण स्वरूप श्याम सुन्दर दास की संपादित कबीर ग्रंथावली के कुछ पदों को उद्धृत किया जा रहा है।

हमारा धन माधव गोबिंद धरनधर इहै सार धन कहियै।जो सुख प्रभु गोबिंद की सेवा सो सुख राज न लहियै॥

इसु धन कारण सिव सनकादिक खोजत भये उदासी।मन मुकुंद जिह्वा नारायण परै न जम की फाँसी॥

निज धन ज्ञान भगति गुरु दीनी तासु सुमति मन लागी।जलत अंग थंभि मन धावत भरम बंधन भौ भागी॥

कहै कबीर मदन के माते हिरदै देखु बिचारी।तुम घर लाख कोटि अस्व हस्ती हम घर एक मुरारी॥३॥

भजि नारदादि सुकादि बंदित, चरन पंकज भांमिनी। भजि भजिसि भूषण पिया मनोहर देव देव सिरोवनी॥

बुधि नाभि चंदन चरिचिता, तन रिदा मंदिर भीतरा॥राम राजसि नैन बांनी, सुजान सुंदर सुंदरा॥

बहु पाप परबत छेदनां, भौ ताप दुरिति निवारणां॥कहै कबीर गोब्यंद भजि, परमानंद बंदित कारणां॥392॥

अहो मेरे गोब्यंद तुम्हारा जोर, काजी बकिवा हस्ती तोर॥बाँधि भुजा भलै करि डारों, हस्ती कोपि मूँड में मारो।

भाग्यौ हस्ती चीसां मारी, वा मूरति की मैं बलिहारी॥महावत तोकूँ मारौ साटी, इसहि मरांऊँ घालौं काटी॥

हस्ती न तोरै धरै धियांन, वाकै हिरदै बसै भगवान॥कहा अपराध संत हौं कीन्हां, बाँधि पोट कुंजर कूँ दीन्हां॥

कुंजर पोट बहु बंदन करै, अजहूँ न सूझै काजी अंधरै॥तीनि बेर पतियारा लीन्हां, मन कठोर अजहूँ न पतीनां॥

कहै कबीर हमारे गोब्यंद, चौथे पद ले जन का ज्यंद॥365॥

गोब्यंदे तूँ निरंजन तूँ निरंजन राया। तेरे रूप नहीं रेख नाँहीं, मुद्रा नहीं माया॥टेक॥

समद नाँहीं सिषर नाँहीं, धरती नाँहीं गगनाँ। रबि ससि दोउ एकै नाँहीं, बहता नाँहीं पवनाँ॥

नाद नाँहीं ब्यँद नाँहीं काल नहीं काया। जब तै जल ब्यंब न होते, तब तूँहीं राम राया॥

जप नाहीं तप नाहीं जोग ध्यान नहीं पूजा।सिव नाँहीं सकती नाँहीं देव नहीं दूजा॥

रुग न जुग न स्याँम अथरबन, बेदन नहीं ब्याकरनाँ।तेरी गति तूँहि जाँनै, कबीरा तो मरनाँ॥219॥

” मैं गुलाम मोहि बेचि गुंसाई। तन मन धन मेरा राम जी के ताई॥”बिष्णु ध्यान सनान करि रे, बाहरि अंग न धोई रे। साच बिन सीझसि नहीं, काँई ग्यान दृष्टै जोइ रे॥...

” कस्तूरी कुण्डल बसै, मृग ढूँढे बन माहिं।ऐसे घट घट राम हैं, दुनिया देखे नाहिं॥”

” ज्यूं जल में प्रतिबिम्ब, त्यूं सकल रामहि जानीजै।”

कबीर कृता राम का, मुतिया मेरा नाऊँ।गले राम की जेवडी जित खैचे तित जाऊँ॥”

कबीर निरभै राम जपि, जब लग दीवै बाती।तेल घटया बाती बुझी, सोवेगा दिन राति॥”

” जाति पांति पूछै नहिं कोई। हरि को भजै सो हरि का होई॥”

साधो देखो जग बौराना,सांची कहौं तो मारन धावै,झूठे जग पतियाना।

हरि जननी मैं बालिक तेरा, काहे न औगुण बकसहु मेरा॥टेक॥

सुत अपराध करै दिन केते, जननी कै चित रहै न तेते॥

कर गहि केस करे जौ घाता, तऊ न हेत उतारै माता ॥

कहैं कबीर एक बुधि बिचारी, बालक दुखी दुखी महतारी ॥१११॥ महतारी ॥१११॥

गोब्यदें तुम्ह थैं डरपौं भारी, सरणाई आयौ क्यूँ गहिये, यहु कौन बात तुम्हारी ॥टेक॥

धूप दाझतैं छाँह तकाई, मति तरवर सचपाऊँ ॥

तरवर माँहै ज्वाला निकसै, तौ क्या लेई बुझाऊँ ॥

जे बन जलैं त जल कुँ धावै, मति जल सीतल होई ॥

जलही माँहि अगनि जे निकसै, और न दूजा कोई ॥

तारण तिरण तूँ तारण, और न दूजा जानौँ ॥

कहै कबीर सरनाँई आयौ, अपनाँ देव नहीं मानौँ ॥११२॥

मैं गुलाम मोहि बेच गुसाँई, तन मन धन मेरा रामजी के ताँई ॥टेक॥

आँनि कबीरा हाटि उतारा, सोई गाहक बेचनहारा ॥

बेचै राम तो राखै कौन राखै राम तो बेचै कौन ॥

कहै कबीर मैं तन मन जाना, साहब अपनाँ छिन न बिसार्या ॥११३॥

अब मोहि राम भरोसा तेरा,

जाके राम सरीखा साहिब भाई, सोँ क्यूँ अनत पुकारन जाई ॥

जा सिरि तीनि लोक कौ भारा, सो क्यूँ न करै जन को प्रतिपारा ॥

कहै कबीर सेवौ बनवारी, सींची पेड़ पीवै सब डारी ॥११४॥

जियरा मेरा फिरै रे उदास, राम बिन निकसि न जाई साँस, अजहूँ कौन आस ॥टेक॥

जहाँ जहाँ जाऊँ राम मिलावै न कोई, कहौ संतौ कैसे जीवन होई ॥

जरै सरीर यहु तन कोई न बुझावै, अनल दहै निस नींद न आवै ॥

चंदन घसि घसि अंग लगाऊँ, राम बिना दारुन दुख पाऊँ ॥

सतसंगति मति मनकरि धीरा, सहज जाँनि रामहि भजै कबीरा॥115॥

राम कहौ न अजहूँ केते दिना, जब है है प्राँन तुम्ह लीनाँ॥टेक॥

भौ भ्रमत अनेक जन्म गया, तुम्ह दरसन गोब्यंद छिन न भया॥

भ्रम्य भूलि परो भव सागर, कछु न बसाइ बसोधरा॥

कहै कबीर दुखभंजना, करौ दया दुरत निकंदना॥116॥

हरि मेरा पीव भाई, हरि मेरा पीव, हरि बिन रहि न सकै मेरा जीव॥टेक॥

हरि मेरा पीव मैं हरि की बहुरिया, राम बड़े मैं छुटक लहुरिया।

किया स्यंगार मिलन कै ताँई, काहे न मिलौ राजा राम गुसाँई॥

अब की बेर मिलन जो पाँऊँ, कहै कबीर भौ जलि नहीं आँऊँ॥117॥

राम बान अन्ययाले तीर, जाहि लागे लागे सो जाँने पीर॥टेक॥

तन मन खोजौ चोट न पाँऊँ, ओषद मूली कहाँ घसि लाँऊँ॥

एकही रूप दीसै सब नारी, नाँ जानौ को पियहि पियारी॥

कहै कबीर जा मस्तिक भाग, नाँ जानूँ काहु देइ सुहाग॥118॥

आस नहिं पूरिया रे, राम बिन को कर्म काटणहार॥टेक॥

जद सर जल परिपूरता, पात्रिग चितह उदास।

मेरी विषम कर्म गति है परा, ताथै पियास पियास॥

सिध मिलै सुधि नाँ मिलै, मिलै मिलावै सोइ॥

सूर सिध जब भेटिये, तब दुख न ब्यापै कोइ॥

बौछैं जलि जैसें मछिका, उदर न भरई नीर॥

त्यूँ तुम्ह कारनि केसवा, जन ताला बेली कबीर॥119॥

राम बिन तन की ताप न जाई, जल मैं अगनि उठी अधिकाई॥टेक॥

तुम्ह जलनिधि मैं जल कर मीनाँ, जल मैं रहौं जलहि बिन पीनाँ।

तुम्ह प्यंजरा मैं सुवनाँ तोरा, दरसन देहु भाग बड़ा मोरा॥

तुम्ह सतगुर मैं नौतम चेला, कहै कबीर राम रमूं अकेला॥120॥

कस्तूरी कुंडल बसे, मृग ढूँढत बन माहि !!

!! ज्यो घट घट राम है, दुनिया देखे नाही !!

राम और कृष्ण की महिमा गाने वाला कबीर न तो स्वयं ईश्वर था न अपने आपको ईश्वर मानता था। मुख् चेलो ने पहले उसे ईश्वर बनाया फिर अपने आपको कबीर का अवतार बताकर ईश्वर कहने लगे हैं।

रामपाल के चेलो अब तो चेतो।

दुसरो पर अभद्र भाषा में असत्य लांछन लगाने से पहले अपने गिरेबान में तो देखो की तुम रामपाल द्वारा कितने मुख् बनाये जा रहे हो।

कबीर के चेलो ने ही तो गुड़ की शक्कर बना दी।

कबीर दास तो समाज सुधारक थे।

उन्होंने पाखंड, अन्धविश्वास, गुरुडम आदि के विरुद्ध आवाज उठाई थी।

कबीर के चेलो ने पहले कबीर को ही ईश्वर बना दिया फिर खुद रामपाल जैसे मुख् अपने आपको साकार ईश्वर कहने लग गये हैं।

जिन कबीर दास ने पाखंड के विरुद्ध संघर्ष किया था उन्हीं कबीर का नाम लेकर उनके चेले पाखंड फैला रहे हैं।

रामपाल ने कबीर दास का नाम लेकर अपना पंथ , अपनी नई दुकान लोगो को मुख बनाने के लिए खोली हैं। सत्य यह हैं की कबीर दास ने किसी भी प्रकार के पंथ को बनाने से मना किया था। पंथ शब्द की व्युत्पत्ति पथ् धातु में अच् प्रत्यय के योग से हुई है जिसका अर्थ-मार्ग है (सन्दर्भ -गणेश दत्त शास्त्री, पदमचन्द्र कोश, पृ० २९८)

कबीर के साहित्य के अध्ययन से यह आभास होता है कि कबीर किसी पंथ की स्थापना के पक्ष में नहीं थे न ही उन्होंने अपने जीवन में किसी पंथ का सूत्रपात अपने नाम पर होने दिया और न ही किसी मत के प्रचार-प्रसार की योजना का प्रयास किया। उन्होंने स्वयं उल्लेख किया है – मत कबीर काहू को थापै/मत काहू को मेरै हो। (सं०) सरदार जाफरी, कबीर वाणी, पृ० १७३

इस धारणा की पुष्टि कबीर के बीजक से भी हो जाती है। कबीर पंथ का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण धार्मिक ग्रन्थ बीजक माना जाता है। इस ग्रन्थ में कुछ ऐसे संकेत मिलते हैं जिसके आधार पर विश्वासपूर्वक कहा जा सकता है कि कबीर पंथ रचना के जबरदस्त विरोधी रहे होंगे। वे कहते हैं – ऐसो जोग न देखा भाई। भूला किरै लिए गफिलाई। महादेव को पंथ चलावै। ऐसों बड़ो महन्त कहावै॥ बीजक पाठ, पृ० ९४

इस पंक्ति से यह स्पष्ट हो जाता है कि अपने नाम पर उन्हीं के द्वारा पंथ चलाये जाने की बात असम्भव-सी है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि कबीर पंथ की स्थापना कबीर के मृत्यु के बाद हुई होगी। विद्वान कबीर पंथ की स्थापना कबीर के बाद उनके शिष्यों द्वारा ही मानते हैं। सन्दर्भ डॉ० केदारनाथ दूबे, कबीर और कबीर पंथ, पृ० १६२

गुरु तो गुड़ थे चेलो ने शक्कर बना दी।

कबीर दास ने पंथ बनाने से मना किया था क्योंकि उनको मालूम था की पंथ बनाने से पाखंड बढ़ता हैं।

कबीर के चेलो ने अपने गुरु की भी नहीं मानी और एक से बढ़कर एक पाखंड के अड्डे खोल दिए। ऐसे पाखंड के अड्डे खोलने वाला को अज्ञानी, अंधा और पाखंडी नहीं कहेंगे तो क्या कहेंगे। रामपाल दास का पंथ ऐसे ही पाखंड का एक और अड्डा हैं। रामपाल के चेलो देखो कबीर दास ऐसे पाखंडी के बारे में क्या कहते हैं।

जाका गुरु भी अंधला चेलौ खरा निरंध/अंधौ अंधा ठेलिया ठूल्यूं कूप पडेत।

(सं.) श्यामसुन्दर दास, कबीर ग्रन्थावली, पृ० २२८. वही, पृ० १४१

रामपाल खुद तो डूबेगा ही तुम अंधे चेलो को भी ले डूबेगा और तुम जैसे अयोग्य शिष्य के बारे में कबीर ने देखिये क्या लिखा हैं –

सतगुरु बपुरा क्या करै जे सिषही मांहे चूक/ भावै तं प्रमोधि ले, ज्यूं बंसि बजाई फूक। सन्दर्भ – श्यामसुन्दर दास, कबीर ग्रन्थावली, पृ० २२८

रामपाल स्वामी दयानंद जैसे वेदों का महान पंडित की निंदा अभद्र भाषा में करता हैं। अपने आपको कबीर का अवतार कहने वाला रामपाल यह भी भूल जाता हैं की कबीर ने परनिंदा, अभिमान आदि को त्याग देने का सन्देश दिया हैं।

**रामपाल के चेलो अब तो आँखे खोलो।**

यह तो पढ़ो की कबीर ने क्या कहा हैं और रामपाल कबीर का नाम लेकर क्या पाखंड फैला रहा हैं।



## **ढोंगी रामपाल के चमत्कारों के दावों का पोस्ट मोर्टम**

आँख वाले अंधों तुम्हारी बुद्धि में क्या गोबर भरा है जो तुम्हें यह समझ में नहीं आता कि रामपाल तुम लोगो को कितना बड़ा मुर्ख बना रहा है। इस विडियो में रामपाल का एक अंध भक्त जो अपने आपको रिटायर्ड नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉक्टर हुड्डा बता रहा है और कह रहा है कि उसे ५० वर्ष की आयु में दिल का दौरा पड़ा था जिसके कारण उसे रोहतक मेडिकल में भर्ती करवाया गया था, बेहोशी की हालत में जब काल के दूत आये तो उन दूतों से रामपाल ने उसकी रक्षा कि और उसके प्राण बचा लिए। यह सब चमत्कार उसके द्वारा रामपाल सतगुरु से नाम दान लेने के कारण हुआ।

उसी रामपाल के बरवाला आश्रम में कुछ महीनों पहले उसी के एक चेले कि मौत दिल के दौरे से हो गई थी। मृतक व्यक्ति ६० वर्ष का था और उसका नाम अर्जुन सिंह था और वह मध्य प्रदेश का रहने वाला था।

अखबार में एक खबर इस प्रकार से छपी थी:-

सतलोक आश्रम में रह रहे एमपी के व्यक्ति की मौत

बरवाला -!- टोहाना रोड पर स्थित सतलोक आश्रम में एक बुजुर्ग की मौत हो गई। पुलिस के अनुसार उन्हें सूचना मिली थी कि आश्रम में मध्य प्रदेश के जिला अशोक नगर निवासी 60 वर्षीय अर्जुन सिंह की मौत हो गई। पुलिस ने मौके पर पहुंच कर शव को कब्जे में ले लिया। फिलहाल पुलिस ने शव को शव गृह हिसार में रखवा दिया है। आश्रम के प्रवक्ता का कहना है कि अर्जुन सिंह की मौत का कारण हार्टअटैक बताया है।

अर्जुन सिंह की रविवार सुबह तबीयत खराब हो गई थी, जिसके कारण उसे बरवाला के एक निजी अस्पताल में उपचार के लिए लाया गया, यहां से चिकित्सकों ने उसे हिसार रेफर किया था। सिविल अस्पताल हिसार ले जाते वक्त रास्ते में अर्जुन ने दम तोड़ दिया। सिटी अस्पताल के चिकित्सक के अनुसार अर्जुन को निमोनिया था व उसका ब्लड प्रेशर कम हो गया था। पुलिस ने मामले के संबंध में मृतक अर्जुन सिंह के परिजनों को फोन के माध्यम से जानकारी दे दी है।

## **अब एक और पाखंड कि पोल खोलते हैं।**

रामपाल अपनी पुस्तक ज्ञान गंगा के पृष्ठ संख्या २८६ पर अपने एक भगत सुरेश दास कि कहानी लिखता है उसके पुत्र को 11000 वाट के करंट कि तारों से उसका लड़का चिपक गया था। उसी समय सतगुरु रामपाल जी महाराज आकाश मार्ग से आए तथा उसके लड़के का हाथ पकड़ कर बिजली से छुड़ाकर छज्जे पर लिटा दिया।

करंट से अपने चेलो को बचाने वाले रामपाल कि ही आश्रम में करंट से उसी के एक चेले कि मौत कि खबर दैनिक जागरण के हिसार संस्करण में दिनांक २१ जुलाई, २०१३ को इस प्रकार से छपी है।

## **संत रामपाल के सतलोक आश्रम में करंट लगने से एक युवक की मौत**

संवाद सूत्र, बरवाला : संत रामपाल के सतलोक आश्रम में करंट लगने से एक युवक की मौत हो गई। युवक की मौत के बाद आश्रम वालों ने स्थानीय पुलिस को सूचित नहीं किया। बल्कि मृतक का शव लेकर भिवानी उसके घर पहुंच गए और उसका शव सीधे उसके घर पहुंचा दिया। मृतक के अभिभावकों ने युवक का भिवानी में पोस्टमार्टम कराया। घटना की सूचना इससे पूर्व भिवानी पुलिस को दी गई। भिवानी पुलिस ने बरवाला थाना में इसकी सूचना दी। चूंकि घटना बरवाला थाना क्षेत्र की थी तो कार्रवाई के लिए बरवाला पुलिस भिवानी पहुंची। इसके बाद भिवानी में ही उसका पोस्टमार्टम कराया। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में युवक की मौत करंट लगने से बताई गई है। यहा घटना 19 जून रात को हुई बताई गई है।

## भिवानी का रहने वाला था मृतक

बरवाला पुलिस के एएसआई भजन लाल जांच अधिकारी ने बताया मृतक सौरभ (21) पुत्र आत्मप्रकाश अविवाहित भिवानी का रहने वाला था। वो बरवाला के सतलोक आश्रम का साधक था तथा यहां आता जाता था। भिवानी पुलिस द्वारा सूचना मिलने के बाद वो जांच के लिए भिवानी गए। वहां पर पोस्टमार्टम कराया गया।

पोस्टमार्टम में उसकी मौत करंट लगने से हुई बताई गई है। डाक्टरी रिपोर्ट आने के बाद अभिभावक संतुष्ट हुए। मृतक सौरभ की माता आशारानी के बयान पर 173 की कार्रवाई कर शव परिजनों के हवाले कर दिया गया। जांच अधिकारी के अनुसार परिजनों ने इस संदर्भ में किसी भी प्रकार का कोई आरोप फिलहाल नहीं लगाया है।

## दस दिन के भीतर दूसरी मौत

10 दिन के भीतर ही सतलोक आश्रम में दूसरी मौत ने आश्रम को एक बार फिर कटघरे में खड़ा कर दिया है। 19 जून की रात को हुई भिवानी के सौरभ की मौत की स्थानीय पुलिस को सूचना नहीं देना व शव को सीधे उसके घर भेजने के कारण आश्रम पर सवालिया निशान लग गया है। इस संदर्भ में पुलिस का भी मानना है कि आश्रम वालों से यह पूछताछ की जाएगी कि सौरभ को आश्रम में आखिर किस प्रकार करंट लगा।

## पहले भी लग चुके गंभीर आरोप

9 जून की रात को भी सतलोक आश्रम में राजस्थान के जिला जोधपुर के गांव कापरडा निवासी 95 वर्षीय जगदीश की संदिग्ध हालात में मौत हो गई थी। तब मृतक के भाई संजय ने कई प्रकार के गंभीर आरोप लगाए थे। तब भी मृतक के घर फोन पर सूचना दी गई थी। कि आश्रम में जगदीश की मौत हो गई है और उसका शव आपके गांव भेजा जा रहा है। परंतु संजय ने उन्हें रोका और शव लेने स्वयं आए थे। उस समय मृतक जगदीश के भाई संजय ने भी आरोप लगाया था कि उसका भाई बीमार नहीं था। उसे मानसिक रूप से बीमार बताकर उसे रस्सी से बांधने का आरोप लगाया था। परंतु संत रामपाल के भाई महेंद्र दास ने मृतक के भाई के आरोपों को गलत बताया था उन्होंने कहा था कि वो पागल था, नशा करने का आदी था।

एक और रामपाल ने यह बकवास लिख दिया कि वह उड़ भी सकता हैं और बिजली कि तार से चिपके हुए को भी बचा सकता हैं, दूसरी और उसके चेलो कि उसके आश्रम मेल करंट से मौत हो रही हैं।

## सबसे बड़े मुख उसके चेले हैं जोकि ऐसी बात पर विश्वास करते हैं।

रामपाल के आश्रम में इस प्रकार से सिलसिलेवार मौत होना एवं उसके अपने चेलो को मौत के मुँह से बचा लेने का दावा करने वाले रामपाल कि बेबसी पाठकों को क्या दर्शाती हैं?

## **पाखंड खंडनी रामपाल और उसके मुख्र चेलो से पूछ रहा हैं कि**

१. रामपाल से नाम दान लिए हुए, उसकी शरण में आये हुए, उसके आश्रम में रहते हुए उसके चेले कि काल के दूतों से रामपाल रक्षा क्यूँ नहीं कर पाया?

२. क्या रामपाल स्वयं अपनी रक्षा काल के दूतों से करने में समर्थ हैं? बुढ़ापा तो उसके बालों से, उसके चेहरे कि झुरियों से स्पष्ट दीखता हैं, किसी भी दिन उसकी मृत्यु हो सकती हैं।

३. अगर रामपाल काल से अपनी रक्षा करने में समर्थ हैं तब तो उसे काल से डरने कि कोई आवश्यकता नहीं होनी चाहिये, मगर रामपाल तो इतना बड़ा डरपोक हैं कि अपने साथ अंगरक्षक रखता हैं, एक और अपने आपको कबीर परमेश्वर का अवतार बताता हैं दूसरी और डरपोक नेताओं के समान बंदूकों ने साये में रहता हैं। जो अपनी रक्षा स्वयं करने में असक्षम हैं वह तुम्हारी क्या रक्षा करेगा मूर्खों?

४. अगर रामपाल के इस दावें में दम हैं तो रामपाल सार्वजानिक रूप से उड़ कर दिखाये और बिजली कि नंगी तार को पकड़ कर दिखाये ? अगर नहीं दिखा पाया तो उसका क्या हश्र होना चाहिये पाठक स्वयं जानते हैं।

**रामपाल के मुख्र चेलो को यह सब पढ़कर भी अक्ल नहीं आयेगी तो कभी नहीं आ सकती।**

हम अंत में ईश्वर से यही प्रार्थना करते हैं कि ईश्वर इन मूर्खों को सद्बुद्धि दे जो चमत्कार जैसे अन्धविश्वास के कारण अपने श्रेष्ठ जीवन का नाश करने पर तुले हुए हैं।

हम उनसे एक ही बात कहेगे

**रामपाल ने तुम्हे बनाया मुख्र, उससा ढोंगी न कोय**

**अंधों अपनी आँख खोल लो, काल से बचा न कोय**